सती - गुजरिया

"नारी के विश्वास की एक अजब दास्तॉ"

रिशी सक्सेना (कबीर)

सती - गुजरिया
नारी के विश्वास की एक अजब दास्तॉ

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-81-19927-51-7

Price: ₹ 398.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

सती - गुजरिया

नारी के विश्वास की एक अजब दास्तॉ

रिशी सक्सेना (कबीर)

लेखक के बारे में

रिशी सक्सेना (कबीर) का जन्म उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के एक छोटे से कस्बे में हुआ। संयुक्त परिवार में अच्छे संस्कारों के बीच परवरिश हुयी, तो वहीं जीवन की प्रारंभिक शिक्षा उसी कस्बे के एक अच्छे स्कूल में।

आप ने हाई स्कूल और इंटरमीडिएट की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के उपरान्त अपनी स्नातक की पढ़ाई लखनऊ विश्वविद्यालय में कम्प्यूटर साईंस विषय से उत्तीर्ण की। साथ ही 2010 में ए.एम.यू. विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में अपना परा–स्नातक एम.सी.ए. पूरा किया। कुछ वर्षों तक नौकरी भी की, अंततः अपने सपने को पूरा करने की खातिर, वर्ष 2014 में मुम्बई का रूख किया, टी. वी. और फिल्मों में लिखने के शौक के चलते बहुत से विषयों पर अधिकारिक तौर पर लिखते हुये लाखों लोगों तक अपनी रचनाओं को पहुँचाने की चाह में लेखन के क्षेत्र में कदम रखा।

सामाजिक दायित्वों और आज के जीवन की कड़वी हकीकतों से सभी को रूबरू कराने के प्रयत्न में आप अभी भी अपनी रचनाओं को जीवंत करने को प्रयत्नशील हैं।

पुस्तक के बारे में

नारी के विभिन्न स्वरूपों के आत्मविश्वास को दर्शाती मेरी इस कहानी में प्यार भी होगा, तकरार भी। समाज की गंदी सोच दिखेगी, तो उस पर तमाचा लगाती नारी।

गाँव से मजबूरी में शहर पहुँची सती और गुजरिया, विपरीत हालातों में भी अपने लक्ष्य को पाती नजर आयेगी।

जिस औरत को गाँव के भरे समाज के बीच अग्नि परीक्षा देने को विवश किया गया था, वह आधुनिक समाज में नारी शक्ति का परचम लहराती नजर आयेगी। वहीं छोटी सी बच्ची कठिन और भेदभाव से भरे वातावरण के बीच नयी बुलंदियों का छूती नजर आयेगी।

एक पिता व माँ का त्याग और एक बच्ची का आत्मविश्वास, पढ़ने वाले पाठकों को हिलाकर रख देगा। ऐसी ही आम जीवन की आम सी कहानी है –

''सती – गुजरिया''

''नारी के विश्वास की एक अजब दास्तॉ''

समर्पण

मैं अपनी यह रचना अपने जीवन के बहुमूल्य निम्नलिखित किरदारों को समर्पित करना चाहता हूँ : –

1. स्वर्गीय देवकी नन्दन (दादा जी)
2. स्वर्गीय जिया (दादी जी)
3. स्वर्गीय गिरजा शंकर सक्सेना। (ताऊ जी)
4. स्वर्गीय कृष्ण स्वरूप सक्सेना। (ताऊ जी)
5. स्वर्गीय रज्जनलाल सक्सेना। (ताऊ जी)
6. समीक्षा सक्सेना। (बहन)
7. श्री अशोक कुमार सक्सेना। (चाचा जी)
8. श्री राज कुमार सक्सेना। (चाचा जी)
9. श्री सी. एल. सक्सेना। (पिता जी)
10. श्रीमती ऊमा सक्सेना। (माँजी)

ये सभी मेरे जीवन के वो पूज्यनीय किरदार है, जिनकी विचारधारा और जीवन के प्रति नज़रिये ने, मुझे एक अच्छा इंसान बनाने के साथ–साथ, लेखन के क्षेत्र में आगे बढ़ने को प्रोत्साहित किया और जिनसे प्राप्त हुई शिक्षा की झलक आप सभी को अक्सर ही मेरी रचनाओं में देखने को मिलेगी।

इसके अतिरिक्त मैं अपने मित्रों और शेष पारिवारिक सदस्यों का भी आभारी हूँ, जिनके सहयोग और विश्वास से मैं अपनी यह रचना, या फिर कहूँ अपना सपना, आप सभी के समक्ष रख पा रहा हूँ।

घोषणा

मेरी इस कहानी में पन्नों पर उद्भव किये गये सभी किरदार, नाम, वस्तु व स्थान काल्पनिक हैं और पूर्णतयाः मेरे मस्तिष्क की उपज है और इनका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं है। मेरी यह कहानी किसी भी रूढ़ीवादी और निरंकुशवादी प्रथा एवं सोच का समर्थन नहीं करती।

समाज में महिलाओं के अलग–अलग स्वरूपों की स्थिति निर्धारित करती मेरी इस कहानी का मकसद, कठिन परिस्थितियों में भी नारी के हिम्मत ना हारने वाले आत्मविश्वास को जगाना है और आप सभी का मनोरंजन करते हुये आपके दिल तक पहुँचाना हैं।

मेरी इस कहानी में वर्णित सभी किरदार, नाम व स्थान पूर्णतयाः काल्पनिक है और इनकी आम जीवन में किसी भी प्रकार की समानता को मात्र एक संयोग ही कहा जायेगा।

प्रस्तावना

''नारी'' इस सृष्टि का वह सर्वशक्तिमान स्वरूप जो अक्सर ही किसी ना किसी रूप में हमारे जीवन को सुख और समृद्धि से भरने को प्रयत्नशील दिखायी देता है। कभी माँ बन अपने बच्चे की सारी बलायें लेता हुआ दिखायी देता है, कभी बहन बन हाथों की कलाई पर राखी बाँध, सामाजिक मर्यादाओं के निर्माण में मदद करता नजर आता है तो कभी बेटी बन, एक इंसान को भगवान के और करीब लाने में मदद करता नजर आता है और उसे और ज़िम्मेदार बनाता है।

मगर हमारे समाज में कुछ ऐसी भी विकृत मानसिकता वाले किरदार मौजूद है जो अक्सर ही अपने नापाक मंसूबों को परवान चढ़ाने की खातिर नारी के इन श्रेष्ठ स्वरूपों से खिलवाड़ करते नजर आते हैं, मगर नारी तो नारी ही है। जितनी बार ये विकृत मानसिकता, उसे दबाने का प्रयास करती है, उतनी ही बार नारी अपने आत्मविश्वास से भरे चरित्र के साथ, समाज के समक्ष, इन किरदारों और विकृत मानसिकता को गलत साबित कर, उनके गाल पर जोरदार तमाचा लगाती हुई दिखायी देती है।

मेरी यह रचना भी नारी के इन दो श्रेष्ठ स्वरूपों माँ बिंदिया, जो आगे चल सती कहलायेगी और बेटी गुजरिया के आत्मविश्वास की परिचायक है। ज्यादा कुछ न कहते हुये, कुछ पंक्तियों के माध्यम से इन श्रेष्ठ किरदारों की संक्षिप्त जीवनी आप तक पहुँचा रहा हूँ –

बिंदिया उर्फ सती

जिसने अपने की मौत देखी, अत्याचार देखा, भरे समाज में अपनी दुर्दशा का नंगा नाच देखा, जो शिकार हुई, पुरूष प्रधान समाज की औछी विचारधारा की मगर –

जो हिम्मत हार नहीं सकती,
कठिन परिस्थितियों से जो भाग नहीं सकती।
आत्मविश्वास ही जिसका गहना है,
जो खुद में माँ दुर्गा स्वरूपा है।
अपने विश्वास से जो आगे बढ़ती जायेगी,
जो बिंदिया थी कभी,
अब सती बन हर नारी को राह दिखायेगी।।

गुजरिया

जो हिम्मत ना हारती, वही गुजरिया है।
जो गैरों को सम्भहालती वही गुजरिया है।
जीवन में आगे बढ़ती जाती वही गुजरिया है।
रोज जो नये शिखर सजाती वही गुजरिया है।
छोटी सी बच्ची जिसका जीवन में कुछ कर गुजरने का सपना था,
मगर उस सपने को सच करने की खातिर,
ना पास कोई अपना था,
जीवन की इस राह में, अपनों की धुँधली यादों के सहारे,
आत्मविश्वास से बढ़ती जायेगी।
गुजरिया छोटी सी तो है,
मगर अपने प्रयासों से हर उम्र की नारी को दृढ़ बनाती जायेगी।।

सती - गुजरिया

नारी के विश्वास की एक अजब दास्तॉ

ऊँ गणं गणं गणपताये नमः, ऊँ गणं गणं गणपताये नमः के जाप के साथ अपने दिन की शुरूआत करती बिंदिया, अभी–अभी नहायी हुई, और सुबह के उस मनमोहक वातावरण में अपनी पूजा की थाल में मिट्टी का दीपक जलाये, मधुर स्वर में भक्ति आराधना के गीत गाती हुई, अपनी कुटिया के एक कोने में रखी भगवान शिव और माँ दुर्गा की छोटी सी मूरत की आरती करती हुई, बड़ी ही प्यारी लग रही है। कुछ ही पलों में उसकी आराधना खत्म हो गयी थी। अपने दोनों जुड़े हुये हाथों और सिर को ढके साड़ी के पल्लू के बीच, आँखें बंद करे अपने परिवार के सदस्यों (पति हरि, बेटी गुजरिया, बेटा बाबू) की खुशामती की दुआ माँग रही है।

उसने पूजा–पाठ बस खत्म ही किया था कि पीछे से दौड़कर आता उसका तीन वर्षीय बेटा उसके पास आकर रूक जाता है। लम्बी–लम्बी साँसें लेता और बुरी तरह से हॉफता वो बच्चा अपनी माँ से कुछ कहना चाहता

था। आखिर कुछ क्षणों के आराम के बाद उस बच्चे की साँस में साँस आती है और वह बिना किसी देरी के अपना संदेशा अपनी माँ को देता हुआ –

''माँ जल्दी चलो, दीदी गिर गयी है, ऊपर से कुछ बोल नहीं रही, जल्दी चलो माँ जल्दी।''

अपने बेटे की बात सुन बिंदिया की तो मानो पैरों तले जमीन ही खिसक गयी थी। अपनी सुधबुध खो, बेहद ही व्याकुल अवस्था में, पूजा की क्रिया वहीं छोड़, अपने बेटे के पीछे–पीछे घटना वाली जगह को भागती है। घर के एक हिस्से में बने छोटे से चौके का दृश्य जहाँ एक सात वर्षीय बच्ची ''गुजरिया,'' जमीन पर करवट लिये हुये पड़ी है। उसे देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो वास्तविकता में उसकी स्थिति बहुत चिंता जनक है।

इस बीच बिंदिया चौके में पहुँच गयी। पहले से ही उसकी दशा खराब थी और जैसे ही वह अपनी बेटी को इस अवस्था में देखती है उसकी दशा और भी खराब हो जाती है। बहुत ही ज्यादा घबरायी और आँसू बहाती बिंदिया, गुजरिया को उठा उसका सिर अपनी गोद में रख बहुत ही परेशानी भरे स्वर में –

''अरे क्या हो गया, हमारी रानी बिटिया को, अभी तो खेल रही थी, आँखें खोल बिटिया आँखें खोल।''

इस व्याकुलता में बिंदिया, गुजरिया के कभी हाथ–पाँव मलती, तो कभी उसके सिर पर प्यार से हाथ फेर उसे अपनी छाती से चिपका लेती, मगर गुजरिया की अवस्था में तो कोई भी बदलाव ही नजर नहीं आ रहा था। इस बीच बिंदिया अपने बेटे से, जो उसके बगल में ही खड़ा हुआ था

''जा बाबू जल्दी से पानी लेकर आ।''

अपनी माँ के हुक्म की तामील करता बाबू पास ही रखे घड़े से पानी का गिलास भर वापस अपनी माँ के पास पहुँचता है और – ''ये लो माँ, क्या हुआ है दीदी को, इन्हें उठाओ ना।''

उस पानी के गिलास से कुछ पानी ले, गुजरिया के चेहरे पर छींटे मार उसे होश में लाने का प्रयास करती बिंदिया को अभी भी कोई सफलता नहीं मिलती और वह अपनी प्यारी बेटी को अपनी छाती से और जोर से लगाते हुये –

''क्या करें हम, ये भी घर पर नहीं है, भगवान रक्षा कर हमारी बिटिया की।''

अब बिंदिया और बुरी तरह से रोने लगी थी। माँ की आँखों में आँसू देख वह तीन वर्षीय बच्चा भी कुछ भावुक हो गया था। इतने में बाहर से आती एक आहट पर सभी का ध्यान घर के बाहरी हिस्से पर जाता है। हरि, खेत से घर वापस आया था। अपनी चप्पलों को उतार,साइकिल को उस घर की एक दिवार से टिका, बाहर ही रखे पानी से वह हाथ–पॉव धो, बस अपने कंधों पर पड़े अंगोछे से उन्हें पोंछ ही रहा था कि बाबू तब तक दौड़कर उसके पास पहुँच गया था। बहुत ही घबराया हुआ सा लग रहा था बाबू और वह बहुत ही परेशानी भरे स्वर में कहता है –

''बापू जल्दी चलो अन्दर दीदी ऊपर से गिर गयी है चौके में, कुछ बोल नहीं रही है।''

लेखक के बारे में

रिशी सक्सेना (कबीर) का जन्म उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के एक छोटे से कस्बे में हुआ। संयुक्त परिवार में अच्छे संस्कारों के बीच परवरिश हुयी, तो वहीं जीवन की प्रारंभिक शिक्षा उसी कस्बे के एक अच्छे स्कूल में।

आप ने हाई स्कूल और इंटरमीडिएट की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के उपरान्त अपनी स्नातक की पढ़ाई लखनऊ विश्वविद्यालय में कम्प्यूटर साईंस विषय से उत्तीर्ण की। साथ ही 2010 में ए.एम.यू. विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में अपना परा–स्नातक एम.सी.ए. पूरा किया। कुछ वर्षों तक नौकरी भी की, अंततः अपने सपने को पूरा करने की खातिर, वर्ष 2014 में मुम्बई का रूख किया, टी.वी. और फिल्मों में लिखने के शौक के चलते बहुत से विषयों पर अधिकारिक तौर पर लिखते हुये लाखों लोगों तक अपनी रचनाओं को पहुँचाने की चाह में लेखन के क्षेत्र में कदम रखा।

सामाजिक दायित्वों और आज के जीवन की कड़वी हकीकतों से सभी को रूबरू कराने के प्रयत्न में आप अभी भी अपनी रचनाओं को जीवंत करने को प्रयत्नशील हैं।

लेखक से सम्पर्क हेतु:
https://facebook.com/risarj
Saxenarishi26@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-81-19927-51-7
9 788119 927517